



अस्मृत



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
361, अन्ना सलाई, तैनामपेट, चेन्नई- 600 018
टेलीफोन नं.: 044-24324530 फ़ैक्स नं.: 044-24320562
ई-मेल: agaetamilnadu@cag.gov.in



अमृत पत्रिका के 32वें अंक विमोचन (सितंबर 2023)
(बाएँ से - प्रधान महालेखाकार के सचिव, प्रधान महालेखाकार, मुख्य अतिथि, वरिष्ठ उप
महालेखाकार/प्रशासन, उप महालेखाकार/पेंशन)



स्वतंत्रता दिवस 2024 के पावन अवसर पर राष्ट्रगान गाते हुए उच्चाधिकारीगण।
(बाएँ प्रधान महालेखाकार (ले. व.ह.), दाएँ ऑडिट कार्यालयों के प्रधान महालेखाकार)

अमृत परिवार

प्रधान संरक्षक



श्री चि.नेडुन्चेलियन
प्रधान महालेखाकार
परामर्शदात्री समिति



सुश्री सुबरंजनी एस.आर.
वरिष्ठ उप महालेखाकार,
प्रशासन



श्री सी. जे. कार्ति कुमार
वरिष्ठ उप महालेखाकार,
निधि



सुश्री विजया पी.
उप महालेखाकार,
पेंशन

प्रधान संपादक



सुश्री पुष्पा शेषाद्री
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक मंडल



सुश्री रति कु.लहेरी
कनिष्ठ अनुवादक



सुश्री स्वाति कुमार
हिंदी अधिकारी



सुश्री सबिता साव
कनिष्ठ अनुवादक

<p>प्रकाशन अमृत (विभागीय हिंदी पत्रिका)</p>	
<p>प्रकाशक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु, चेन्नै – 600 018</p>	
अंक – 33 वां	वर्ष 2024-25
मूल्य राजभाषा के प्रति निष्ठा	मुद्रक जया ग्राफिक्स, चेन्नई
<p>अस्वीकरण- रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे मुख्य संरक्षक, संरक्षक, परामर्शदात्री समिति, निर्देशक तथा संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।</p>	

मुख्य पृष्ठ परिचय

 <p>बृहदीश्वर (या बृहदीश्वर) मन्दिर या राजराजेश्वरम् तमिलनाडु के तंजौर में स्थित एक हिंदू मंदिर है जो 11वीं सदी के आरम्भ में बनाया गया था। इस मंदिर के निर्माण कला की प्रमुख विशेषता यह है कि दोपहर को मंदिर के हर हिस्से की परछाई जमीन पर दिखती है। मगर, इसके गुंबद की परछाई पृथ्वी पर नहीं पड़ती।</p>	 <p>तमिलनाडु क्षेत्र की महत्वपूर्ण फसलें चावल, कपास, बाजरा, गन्ना, सूरजमुखी, धनिया और बंगाल चना हैं। ज्वार, कपास और सूरजमुखी की खेती उत्तर-पूर्वी मानसून के मौसम में वर्षा आधारित फसलों के रूप में की जाती है।</p>	 <p>पोंगल का तमिल में अर्थ उफान या विप्लव होता है। गुड़, चावल और दाल से बना मीठा पोंगल मिठास और समृद्धि का प्रतीक है। चावल और दाल के साथ पकाया जाने वाला नमकीन पोंगल, जिसमें काली मिर्च और जीरा मिलाया जाता है, फसल के मौसम का सार दर्शाता है।</p>
 <p>तिरुवल्लुवर प्रतिमा, या वल्लुवर प्रतिमा, तमिल कवि और दार्शनिक की मूर्ति है, जो धर्म और नैतिकता पर एक प्राचीन तमिल कार्य तिरुक्कुरल के लेखक थे। मूर्ति और पीठिका की संयुक्त ऊंचाई 133 फीट (41 मीटर) है, जो तिरुक्कुरल के 133 अध्यायों को दर्शाती है। तिरुक्कुरल ("पवित्र दोहे"), मानव विचार की उत्कृष्ट कृति मानी जाती है। यह पारंपरिक भारतीय वास्तुकला के अनुरूप निर्मित है।</p>	 <p>सातवीं शताब्दी का यह बंदरगाह शहर महाबलीपुरम अपने चट्टानों को काटकर बनाए गए तटीय मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। कृष्ण की बटर बॉल चट्टान है यहाँ है, जो कि बहुत सुप्रसिद्ध है और पर्यटकों का आकर्षण का केंद्र है। माना जाता है कि यह चट्टान लगभग 2,000 वर्ष पुरानी है और इस चट्टान का इतिहास अज्ञात है।</p>	 <p>भरतनाट्यम, एक शास्त्रीय नृत्य शैली है जिसकी उत्पत्ति तमिलनाडु में हुई है, और यह एक प्रसिद्ध नृत्य शैली है जो अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करती है। यह भारतीय धार्मिक विषयों और आध्यात्मिक विचारों को व्यक्त करती है। प्रत्येक मानवीय अनुभव के मूल में नौ मौलिक भावनाओं को दर्शाती हैं: श्रृंगार, हास्य, करुणा, वीर, भयंकर, विभत्स, रौद्र, और शांति।</p>
 <p>करगम नृत्य भारत के तमिलनाडु राज्य में किया जाने वाला एक लोक नृत्य है। ग्रामीण लोग अपने रीति-रिवाज के तहत वर्षा देवी "मारी अम्मन" और नदी देवी "गंगई अम्मन" की स्तुति में यह नृत्य करते हैं।</p>	 <p>पोंगल आमतौर पर 13 से 16 जनवरी के बीच मनाया जाता है। चार दिन - भोगी पोंगल, तई पोंगल, मट्टू पोंगल और कानुम पोंगल - का अपना अलग महत्व है। 14 जनवरी को तई पोंगल मकर संक्रांति से मेल खाता है, जो फसल उत्सव है जिसे पूरे भारत में विभिन्न क्षेत्रीय नामों से मनाया जाता है।</p>	 <p>जल्लीकट्टू, तमिलनाडु का एक पारंपरिक खेल है जो पोंगल के तीसरे दिन मनाया जाता है। यह नाम दो शब्दों से बना है, जल्ली (चाँदी और सोने के सिक्के) और कट्टू (बंधे हुए)। इस त्यौहार में जीतने वाले बैलों की बाज़ार में बहुत माँग होती है और उन्हें सबसे ज्यादा कीमत मिलती है। यह त्यौहार राज्य में सांस्कृतिक पर्यटन का हिस्सा है।</p>

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से: प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा - हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएँगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय हिंद !!



अनुक्रमणिका

हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	5
प्रधान महालेखाकार का संदेश	7
वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन का संदेश	8
वरिष्ठ उप महालेखाकार/निधि का संदेश	9
उप महालेखाकार/पेंशन का संदेश	10
संपादक की कलम से	11
आपके पत्र	12

क्र.सं.	रचनाएँ	रचनाकार	पृ.सं.
1.	घरौंदा	सुश्री पुष्पा शेषाद्री	14
2.	हिंदी कक्ष	सुश्री रंजनी सिवकुमार	16
3.	भारत का स्कॉटलैंड – कूर्ग	सुश्री उषा रघुनंदन	17
4.	अनमोल जीवन	सुश्री स्वाति कुमार	19
5.	हर्षोउल्लस का पर्व- पोंगल	सुश्री रति कु. लहेरी	21
6.	तू चांद ही क्यों कहलाता है?	श्री आयुष कुमार	22
7.	क्यूँ..."	श्री भूषण कुमार	23
8.	तू अकेला ही काफी है	श्री भूषण कुमार	24
9.	एक कवि तो हम भी है	श्री राहुल कुमार महतो	25
10.	मातृ दिवस	श्री सौरभ शर्मा	26
11.	एक आह्वान	श्री शिवजी पांडेय	27
12.	कर्म - धर्म का एक रूप	सुश्री तनु शर्मा	28
13.	बची रहनी चाहिए	श्री विवेक कुमार	30
14.	ईमानदारी- एक जीवन शैली	सुश्री पुष्पा शेषाद्री	31
15.	आग..... जरूरी है	सुश्री रति कु. लहेरी	32
16.	दफ्तर	श्री सिरिगिरि रवि कुमार	33
17.	हिंदी	सुश्री ज्योति वर्मा	34
18.	नारी और प्रकृति	सुश्री विजयलक्ष्मी शंकर	35
19.	यात्रा वृत्तांत	सुश्री विजयलक्ष्मी शंकर	36
20.	योग	श्री के. गोपीनाथ	38
21.	माता-पिता	सुश्री अंजिता अमन	40
	राजभाषा से संबंधित		41
	कार्यालय की गतिविधियों की झलक		45

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

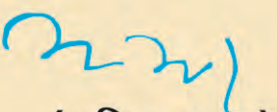
दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)

प्रधान महालेखाकार का संदेश



श्री चि. नेडुन्वेलियन प्रधान महालेखाकार

मानव जाति लाखों वर्षों में विकसित हुई है। इस विकास के दौरान कई खोजें और आविष्कार हुए। इनमें से वाणी भी एक विकास था। इस विकास का विस्तार, ध्वनियों को लेखन के रूप में बदलने से हुआ। अपने अलग-अलग परिवेशों में इस वाणी ने अपने साथ कई सांस्कृतिक परिवर्तनों, भौगोलिक परिस्थितियों और इतिहास को एक भाषा, उसके व्याकरण और संरचना में आत्मसात किया। कई हजार साल पहले कुछ समाज अपनी भाषाएँ बनाने और उन्हें लिखने में सक्षम थे तो कुछ अभी भी अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रहे हैं। जो भी हो, हमेशा याद रखें कि प्रत्येक भाषा मानव विकास की कई पीढ़ियों का परिणाम है।

किसी भी भाषा को जीवित रहने के लिए समाज में बहुत मजबूत पैर जमाना पड़ता है, यह प्रचलित है। एक अच्छी कहानी या साहित्य का दुनिया की कई भाषाओं में अनुवाद होता है। दुनिया भर की संस्कृतियाँ जो दूसरे संसाधनों से ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक हैं, वे लगातार नए ज्ञान को अपने पाले में लाती रहती हैं। भाषाओं के व्यापक प्रसार का एक और कारण व्यापार भी था।

भारत कई संस्कृतियों का घर है। उनके आपस में घुलने-मिलने से इस देश का एक अनूठा स्वाद बना है जिसे दुनिया भर में खाया जा सकता है। कोई भी चीज़ अलग-थलग नहीं रह सकती। हिंदी भाषा और हमारे बीच इसके उपयोग को मज़बूत करने के लिए, आइए हम इस महान देश के सभी युगों और लोगों की विविध सांस्कृतिक रत्नों को इसमें शामिल करके इसे समृद्ध करें।

वरिष्ठ उप महालेखाकार का संदेश



**सुश्री सुबरंजनी एस.आर.
वरिष्ठ उप महालेखाकार, प्रशासन**

कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'अमृत' का तैंतीसवाँ अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हिंदी में होने वाले नियमित सरकारी कामकाज के अलावा, पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह हमारे अधिकारियों की छिपी हुई साहित्यिक प्रतिभा को सामने लाने के लिए एक उपकरण के रूप में भी कार्य करती है।

मुझे आशा है कि पत्रिका पढ़ने में रुचिकर होगी और आधिकारिक कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए पाठकों में रुचि जगाएगी। मैं 'अमृत' पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी लेखकों और संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई देती हूं।
जय हिंद !

वरिष्ठ उप महालेखाकार का संदेश



श्री सी. जे. कार्ति कुमार वरिष्ठ उप महालेखाकार, निधि

इस कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'अमृत' के 33 वें अंक के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएँ। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी पत्रिका एक सशक्त माध्यम है।

पत्रिका, कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को यह अवसर देती है कि वे अपने मनोभाव को अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर सकें। कार्यालयीन कार्य को हिंदी में करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।

आशा है कि कार्यालय के सभी अधिकारी और कर्मचारी प्रतिवर्ष पत्रिका के प्रकाशन में लेख, कविता, यात्रा वृत्तांत आदि मौलिक रचनाओं के रूप में अपना योगदान देते रहेंगे। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिंद !

उप महालेखाकार का संदेश



सुश्री विजया पी. उप महालेखाकार, पेंशन

कार्यालय की राजभाषा गृह-पत्रिका 'अमृत' के 33 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिंदी को सम्पूर्ण देश में कार्यालयी भाषा के तौर पर संवैधानिक दर्जा मिला है। कार्यालयीन पत्रिकाएँ कार्मिकों के विचारों, भावनाओं और अभिव्यक्ति का दर्पण होती है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ कार्मिकों की राजभाषा के प्रति निष्ठा का प्रमाण है। हमारे कार्यालय के कार्मिक शासकीय कार्य में हिंदी का प्रयोग कर हिंदी के प्रचार - प्रसार में योगदान कर रहे हैं। राजभाषा के प्रचार - प्रसार के लिए इस कार्यालय की हिंदी गृह - पत्रिका 'अमृत' का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

मैं, पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई देती हूँ और पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएँ देती हूँ।

जय हिंद !

प्रधान संपादक की कलम से.....



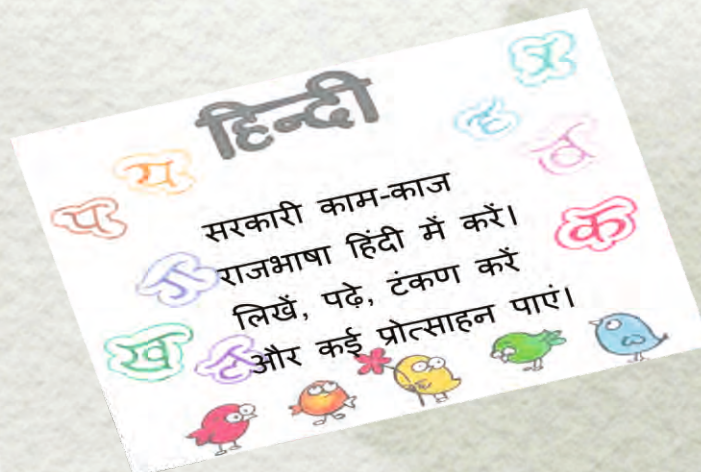
सुश्री पुष्पा शेषाद्री\

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित है और इस कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'अमृत' के 33 वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता की भाषा है। राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार हिंदी का उपयोग सरल, सहज और सुबोध तरीके से किया जाना है ताकि इसका अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके। राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना हमारा नैतिक एवं संवैधानिक उत्तरदायित्व है। पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिंदी के निरंतर विकास में सहभागी होंगे।

'अमृत' पत्रिका न केवल हिंदी को बढ़ावा देने में सहायक है अपितु कार्यालय के कार्मिकों को अपनी लेखन प्रतिभा को निखारने में भी अति सहायक है। मैं, 'अमृत' परिवार, संपादक मंडल व रचनाकारों को बधाई देती हूँ जिन्होंने पत्रिका को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाई है।

'अमृत' का सफल प्रकाशन हिंदी के प्रति जागरूकता और समर्पण की भावना का प्रतिफल है। आशा है पत्रिका का यह अंक पाठकों की उम्मीदों पर खरा उतरेगा। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए यह पत्रिका एक अनमोल प्रयास है।



जय हिंद!



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), तमिलनाडु
"लेखापरीक्षा भवन" 361, अन्ना साले, तेनामपेट, चेन्नै - 600 018.
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I), TAMIL NADU
"LEKHA PARIKSHA BHAVAN" 361, Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018.



सं./No.

सं. प्र.मले. (लेख-1)/हिं. अनु./प्र.सं. पत्र/14-02/2024-25/31

दि.: 04.07.2024

सेवा में
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
तमिलनाडु,
361, अन्ना साले, तेनामपेट,
चेन्नै - 600018

महोदय,

विषय- हिन्दी पत्रिका "अमृत" पर अभिमत

हमें आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित "अमृत" के 32 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। राजभाषा हिन्दी के विकास में पत्रिका के माध्यम से किया गया यह प्रयास अत्यंत ही प्रशंसनीय है। पत्रिका में सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर सेवानिवृत्ति के बाद, प्रसन्नता में ही स्वर्ग, महीनों का नामकरण, बच्चों में इंटरनेट और ब्लूलाइन गैम की खत, मेरी मौ, इन्वज़ार आदि रचनाएँ विशेष रूप से रोचक हैं। कार्यालय के विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रमों से संबंधित छायाचित्रों, चित्रकलाओं का प्रस्तुतीकरण भी अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका की साजसज्जा भी अत्यंत मनोहारी और प्रशंसनीय है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादन मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

समन्वयवाद,

भवदीय,
4/7/24.
हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011
क.हि.क./फा-7/ जावक - 23 दिनांक 14.07.2024

प्रति,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
तमिलनाडु 361, अन्ना सालाई, तेनामपेट,
चेन्नई-600018

विषय : हिन्दी ई-पत्रिका "अमृत" के 32वें अंक की पावती बाबत।
संदर्भ : आपके पत्र सं. हिन्दी कक्ष अमृत-32/2024-25/ दिनांक 02.07.2024।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "अमृत" के 32वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर सेवानिवृत्ति के बाद, महिला सशक्तिकरण की वास्तविकता, मजदूर किसान, नौकरी, जीवन का लक्ष्य, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

2/भा/दना/1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) भवन-2



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of the Principal Director of Audit (Central) Lucknow

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II,
महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Principal Accountant General (Audit)-II,
Maharashtra, Nagpur-440001

पत्रांक सं.: प्र.म.नि.(के.)/प्रशासन/रा.भा.हि./का.सं.82047/2024-25/ 1/676228/2024 दिनांक: 12-07-2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु
361, अन्ना सालाई, तेनामपेट, चेन्नई-600018

विषय:- हिंदी गृह-पत्रिका "अमृत" के 32वां अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह-पत्रिका "अमृत" के 32वां अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उच्चाव हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ "नौकरी", "सूचित करने के बजाए राय कायम करता मीडिया" एवं "रिश्वत में वो बात नहीं रही" आज के आधुनिक समाज को प्रदर्शित कर रहा है। पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनाएँ अत्यंत प्रेरक, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Signed by Rajesh Kumar
Swyambhu
Date: 12-07-2024 17:32:37
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन

सं.हिंदी अनुसूचक/प्रतिक्रिया/20/2024-25/जा.क.51 दिनांक : 05/07/2024

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
तमिलनाडु, चेन्नई- 600018

विषय:- हिंदी पत्रिका "अमृत" के 32वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी "अमृत" के 32वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कवित्तएँ, उत्कृष्ट एवं जनवर्धक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्रं.	नाम एवं पदनाम	रचनाएँ
1.	डॉ. सुभाषचंद्र खट्टर, हिंदी अधिकारी	राम सृजत सुखमूल
2.	श्री पवन कुमार सिंह, लेखाकार	छद्मपत्र रोकने के उपाय
3.	श्री अनिल कुमार, लेखाकार	मजदूर किसान
4.	श्री शशिकान्त कुमार, लेखाकार	महीनों का नामकरण

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
PRIYANKA

GOSWAMI

हिंदी अधिकारी



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II),
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001



सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2024-25

दिनांक: 09.07.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले व ह), तमिलनाडु
361, अन्ना सलाई, तेनामपेट,
चेन्नई - 600018

विषय:- पत्रिका की पावती - बाबत

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "अमृत" के 32^{वें} अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है और संपूर्ण सामग्री उत्कृष्ट और ज्ञानप्रद है। विशेषकर श्री राजीव कुमार का लेख 'प्रसन्नता में ही स्वर्ग' एवं सुश्री ज्योति यादव की कविता 'मेरी माँ' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

Signed by Susheela P V
Date: 10-07-2024 16:45:46

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष



दूरभाष/Telephone-0612-2225634
फैक्स/Fax 0612-2221056

ई-मेल/E-mail-agaebihar@cag.gov.in

वेबसाइट/Website- https://cag.gov.in/ac/bihar/en

महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक-हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाग/24-25/33
दिनांक: 11.07.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.),
तमिलनाडु, चेन्नई-600018

विषय: हिंदी पत्रिका "अमृत" के 32^{वें} अंक की अभिलेखीकरण एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषयक आपके कार्यालय/हिंदी पत्रिका "अमृत" का 32^{वां} अंक ई-मेल के द्वारा प्राप्त हुआ है। पत्रिका का यह अंक गुण, रचनात्मकता एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से सराहनीय है। पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजशाही हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी मौखिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार भविष्य में प्रगति पर अग्रसर रहे, यही हमारी शुभकामना है।

भवदीया,

सुनील कुमार
हिंदी अधिकारी/हिंदी अनुभाग



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT
GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन: 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email: agaupunjab@cag.gov.in



पत्रांक- हि.क./हिंदी/पत्रिका/2024-25/673450/2024

दिनांक: 11.07.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
चेन्नई - 600018

विषय:- कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'अमृत' के 32^{वें} अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'अमृत' का 32^{वां} अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समग्रित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार(वी/सु/बी)	रचनाएँ
1	शैलेन्द्र कुमार	कर्म का रहस्य
2	अजयनाथ रिपारी	महिला सशक्तिकरण की वास्तविकता
3	ज्योति यादव	मेरी माँ
4	सविता साव	सूचित करने के बजाए राय कायम करना मौडिया
5	मौना पी. जे. एम्का	सच्ची मित्रता

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया
(हिंदी अधिकारी)

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj - 211001
Phone: 2421364, 2421063, 2624467 Fax: 0532-2423485



पत्रांक - क्ष.क्ष.नि.ज्ञ.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती/132/2024-25/142

दिनांक : 04.07.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
तमिलनाडु

विषय:- हिंदी पत्रिका 'अमृत' के 32^{वें} अंक की पावती।

संदर्भ:- पत्रांक हिंदी कक्षा/Hindi Cell/अमृत-32/Amrit-32/2024-25/ दिनांक 02.07.2024

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृत' का 32^{वां} अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सादर धन्यवाद।

पत्रिका का कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। लेखों में विशेषकर 'राम युजस सुखमूल', 'प्रसन्नता में ही स्वर्ग', 'जलती चिताओं के बीच जिंदगी', 'दोस्त न जाने कहीं गुम हो गया', 'महीनों का नामकरण' एवं 'समाज में नारी का स्थान' पठनीय, रोचक एवं सराहनीय हैं। यह पत्रिका निःसंदेह प्रभावशाली है। पत्रिका के उच्चवर्ग भविष्य के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सहायक

सुश्री पुष्पा शेषाद्री वरिष्ठ लेखा अधिकारी



घरौंदा

सुबह की पहली किरण छन कर आई
तन को छूकर मुझे जगाई
छत पर बने चिड़िया के घोंसले से
आती आवाज ने आभास दिलाया
उसका परिवार भी जाग गया
मादा चिड़िया पर है भार उनके पोषण का
और मेरी दिनचर्या का चक्र शुरू करने का

होता है आभास अपनी जिम्मेदारियों का
अभिभावक को ही अपने शिशुओं का
उस चिड़िया का जीवन मानो मेरी जीवन का है आईना
मेरी अपनी संवेदनाओं का, मैंने है जाना

मेरे अपने घरौंदे में पल रहे मेरे अंश
जुड़ी हैं जिनसे मेरी हसरतें, मेरा हर्ष
मेरी नन्ही गुड़िया जो कर रही स्वप्न लोक में विचर
उसकी ख्वाहिशें आशाएँ पूरी करने का ख्याल हर प्रहर
कोशिश ये करूँ
और दूर रख पाऊँ उससे हर कहर ।
मेरा नन्हा राजकुमार जो कर रहा तलाश
ऊँचाइयों की, जिसे छुआ उसके पसंदीदा खिलाड़ियों ने
उसे भी हौसला देना है

ताकि मुरझाए न वो, न हो हताश
अब तो जीवन का यही मकसद रह गया है
मानो मझदार में किनारा मिल गया है

उन्हें काबिल बनाऊँ इस कदर कि वो भी पंख फैलाएँ
नापें गगन की छोर और उड़ते जाएँ

उनकी अभिलाषाएं पूर्ण हों,
सफलता उनकी झोली में समाये
ये ही मैंने सीखा है उस मादा पक्षी से
जो मेरे घर में बनाए है बसेरा
और पोषित करती अपने चूजों को,
देती हर संकट से पहरा
बनाती उन्हें सक्षम, रहता उसका सहारा

अपने नन्हें पंख फड़फड़ाकर निकले अपने नीड़ से
खो जाएँ इस जहाँ में बने स्वच्छंद से ॥

पर हाँ वियोग का दर्दनाक मंज़र आता है याद
तो आँखें सहसा नम होती है और दिल करता फरियाद
कभी न उगे उनके पंख, कभी न बढ़ाए कदम
सिमटे रहें मेरे आँचल में और मैं उस सुकूनभरी
अनुभूति को पाती रहूँ हरदम
सिहर जाती हूँ ये सोचकर प्रकृति के आगे किसकी चली है
आगे बढ़ना, शाखाएँ फैलाना ही जीवन की पहेली है

अब तो लगती वो चिड़िया भी सहेली है
सीखना है उससे जीवन का दर्शन ये मैंने ठान ली है
करना है अपने को संबल
और हँस कर काटना है हर पल
भरना है रंग अपने शिशुओं कि ज़िंदगी में
संवारना है उनका कल ॥



हिंदी कक्ष

सुश्री रंजनी सिवकुमार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



आज मैं हमारे कार्यालय के हिंदी कक्ष के बारे में बात करना चाहूँगी।

कार्यालय में हमारी नियुक्ति के समय, हममें से अधिकतर लोगों को हिंदी में लिखना या पढ़ना नहीं आता था। लेकिन नियुक्ति के पश्चात, हमें हमारे 'हिंदी कक्ष' के कार्मिकों द्वारा हिंदी कक्ष के बारे में ज्ञात हुआ।

वर्ष 1987 में जब मैंने इस कार्यालय में कार्यभार ग्रहण किया तब मुझे पता चला कि केंद्र सरकार के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। तीन अलग-अलग स्तरों पर यथा प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ परीक्षाएँ तथा हिंदी टंकण परीक्षा आयोजित की जाती हैं। तब हिंदी कक्ष में कार्यरत एक कार्मिक थीं जिनका नाम कल्याणी था, वे हमारे पास आ-आकर सभी से हिंदी भाषा प्रशिक्षण कक्षा में भाग लेने का अनुरोध किया करती थीं। हिंदी कक्ष के कार्मिक बहुत ही जमीन से जुड़े हुए थे, जिनके कारण कार्यालय के कार्मिकों की राजभाषा हिंदी का ज्ञानस्तर बढ़ने में बहुत मदद हुई। उनके नामांकन के कारण कार्यालय के कई कार्मिक हिंदी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए। हमने भी प्रोत्साहन राशि प्राप्त की।

अब भी, हिंदी कक्ष के कार्मिक हमारे लिए पत्रों/दस्तावेजों का अनुवाद करते हैं तथा तुरंत हमें दे देते हैं। जिससे हमें कार्यालयीन कार्य में द्विभाषी रूप में कार्य करने में सहायता मिलती है और अपनी कार्यक्षमता में सुधार करने में भी सहायक सिद्ध होती है।

बिना जाने-बूझे ही हिंदी कक्ष के साथ हम राजभाषा प्रगति की ओर बढ़ते गए। हिंदी कक्ष को बहुत-बहुत बधाई।



भारत का स्कॉटलैंड – कूर्ग

सुश्री उषा रघुनंदन
सहायक लेखा अधिकारी



हमारे भारत देश में ऐसी बहुत सारी जगह हैं, जिनकी तुलना दूसरे देशों से की जाती है। ऐसी ही एक जगह है जिसका नाम है कूर्ग, जो कि कर्नाटक में स्थित है। कर्नाटक की सुरम्य पश्चिमी घाटों के बीच बसा कूर्ग अपने आप में प्रकृति का एक अलग सौन्दर्य अजुबा है। कूर्ग का हरा-भरा वातावरण, धुंध से ढकी पहाड़ियां, झरने, चाय-कॉफी के बाग और जंगल आपको यहां घुमने और ठहरने के लिए मजबूर कर देंगे। कूर्ग को, कोडगू के नाम से भी जाना जाता है, जो प्रकृति के प्रेमी और एडवेंचर पंसद लोगों के लिए शानदार स्पॉट है।

शहरों की भीड़भाड़ और ट्रैफिक से कई दूर कूर्ग की वादियों से आपको रूबरू कर आते हैं। सर्वप्रथम यहाँ कूर्ग में बहुत सारे प्यारे-प्यारे फॉल्स हैं, जैसे कि एबी फॉल्स, इरूपू फॉल्स, हेलावरा फॉल्स, मलाली फॉल्स, देवराकोली फॉल्स। ये सभी फॉल्स बहुत ही प्यारे हैं किन्तु एबी फॉल्स बहुत ही सुन्दर है। मदिकेरी के करीब यह फॉल्स, अंग्रेजों के जमाने में इसे जेसी फॉल्स के नाम से जाना जाता था। कहा जाता है कि इसका नाम क्षेत्र के पहले ब्रिटिश पादरी ने अपनी बेटी की याद में रखा था। यहाँ आप हरे-भरे चाय, कॉफी और मसालों के बागानों के बीच झरने का आनंद ले सकते हैं।

कूर्ग अपने समृद्ध कॉफी बागानों के लिए जाना जाता है। घूमने आने वाले लोग यहाँ कॉफी की खेती लेते हुए दुर्लभ नजारा सकते हैं। सिर्फ नजारा ही नहीं किन्तु फ्रेश कॉफी की चुस्की का मजा भी ले सकते हैं। कूर्ग में खान-पान के अलावा एडवेंचर एक्टिविटीज बहुत सारी उपलब्ध हैं जो युवाओं को खास कर आकर्षित करता है। ट्रेकिंग प्रेमियों के लिए बहुत सी उत्तम स्थान जैसे ब्रह्मागिरि शिखर, तांडियादामोल पीक, कोपाटी ट्रेक, पुष्पगिरि उपलब्ध हैं। ब्रह्मागिरि शिखर पश्चिमी घाट की सबसे ऊँची चोटी कहा जाता है। यहाँ ट्रेकिंग के दौरान आपको फूल, पक्षी और कैपिंग स्पोर्ट्स भी मिलेंगे। तांडियादामोल पीक में ट्रेकिंग के दौरान आपको हरे-भरे जंगलों के साथ बहती नदियाँ और फूलों का नजारा आपको आकर्षित करता है। इसे कूर्ग की सबसे ऊँची चोटी और कर्नाटक की दूसरी सबसे ऊँची चोटी माना जाता है।

जगह की प्राकृतिक सुंदरता में आराम करने के लिए कूर्ग की यात्रा करने वाले पर्यटक यहाँ रिवर राफ्टिंग, कैनोइंग, रेपलिंग, रॉक क्लाइम्बिंग और माउंटेन क्लाइम्बिंग जैसी विभिन्न साहसिक खेल गतिविधियों की और भी आकर्षित होते हैं। पहाड़ियों में पैदल चलने वाले पैदल यात्रियों द्वारा विभिन्न रास्ते बनाए जाते हैं जो वहाँ ट्रेक करते हैं।



कूर्ग में प्रकृति के साथ-साथ मन को लुभा देने वाले मंदिर भी बहुत हैं जिससे परमात्मा की भक्ति और मन की शांति प्राप्त होती है। नामट्रोलिंग मठ को स्वर्ण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

इसे तिब्बती बौद्ध धर्म संबंधित स्कूलों का शिक्षण केंद्र माना जाता है। इस मठ में आपको सोने से जड़ी बौद्ध मूर्तियाँ और तिब्बतियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की छाप देखने को मिलेगी। आप इस स्वर्ण मंदिर में आराम से घूम सकते हैं । यहाँ कूर्ग में ऐसे ही एक और भव्य मंदिर है, जो ऊँची पहाड़ के शिखर पर स्थित है। जिसका नाम है तले कावेरी, जहाँ से कावेरी नदी का आरम्भ होता है, यहाँ माँ कावेरी और शंकर भगवान की भव्य प्रतिमाएँ काफी सुंदर हैं ।

विविध संस्कृतियों का मिश्रण यहाँ देखा जा सकता है जो भारत के हृदय और आत्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं । तो आप भी एक बार अवश्य उस प्रकृति का आनंद लिजिएगा।

मानक हिंदी का प्रयोग करें, आसान है।
टिप्पणियाँ हिंदी में लिखें।
मसौदे हिंदी में तैयार करें।
शब्दों के लिए अटके नहीं।
अशुद्धियों से घबराएँ नहीं।
अभ्यास अविलंब आरंभ करें।
हिंदी लिखें, पढ़ें और गर्व करें।



अनमोल जीवन

सुश्री स्वाति कुमार
हिंदी अधिकारी



“खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है.”

कहते हैं कि जहाँ चाह है वहाँ राह है। अर्थात् यदि आप कुछ करने का मन बना लें तो आप उसे अपनी प्रतिभा और मेहनत से कर सकते हैं। यदि वास्तव में कोई कुछ हासिल करना चाहता है, तो वह इसे प्राप्त करने के तरीके खोजता रहेगा और अंत में सफल होकर ही रहेगा। अगर आप किसी चीज को पाने के लिए सख्ती से लगे हुए हैं और पूरी तरह से प्रयास करते हैं तो आप सभी कठिनाइयों को पार कर आखिर में सफल हो ही जाते हैं। ऐसा ही एक श्रेष्ठ उदाहरण आप सबके समक्ष प्रस्तुत है जिन्होंने न केवल खुद का, वरन् अपने परिवार का, अपने गाँव का, अपने कार्यालय का, अपने विभाग का, अपने मूल राज्य के साथ-साथ कार्यरत राज्य का, यहाँ तक की देश का नाम रोशन किया है और सभी को गौरवान्वित किया है। मैं बात कर रही हूँ श्री संजीव कुमार गिरि जी की। इनकी कहानी कुछ यूँ है-

संजीव कुमार गिरि जी बिहार के समस्तीपुर जिले के सरायरंजन प्रखंड के हरसिंगपुर के निवासी हैं। संजीव जी बचपन में पोलियो का शिकार हो गये थे, अपने सहपाठियों के चिढ़ाने को नज़रअंदाज करते हुए अपने लक्ष्य की ओर ही केंद्रित रहे। उन्होंने अपने हालात से कभी हार नहीं मानी। अपनी इस कमजोरी को ही उन्होंने अपना बल माना। इन्होंने एम.ए. की पढ़ाई की। 2014 में उनकी नौकरी कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) के माध्यम से केंद्रीय सरकार के कार्यालय में हुई। उनकी लगन यहीं तक आकर नहीं रुकी, उनका लक्ष्य और आगे बढ़ने की थी, कुछ कर दिखाने की, साधारण से असाधारण करने की। उनकी रुचि पैराशूटिंग में थी। अपनी लगन और मेहनत से वे राज्य स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के पैराशूटिंग के खिलाड़ी बने।

उन्होंने एक दर्जन से अधिक राष्ट्रीय पदक जीते। युवा पैराशूटर संजीव कुमार गिरि ने दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित पैराशूटिंग प्रतियोगिता में चार गोल्ड मेडल जीतकर समस्तीपुर बिहार का एवं कार्यरत राज्य तमिलनाडु का नाम रोशन किया है। नयी दिल्ली स्थित डॉ. करणी सिंह रेंज में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता फर्स्ट ओपन बुल्स हिट एंड विन चैलेंज शूटिंग कंपटीशन में उन्होंने चार गोल्ड मेडल जीता। और इस तरह एक-एक करके वे सफलता की सीढ़ी चढ़ते गए। फिर उनका चयन दिव्यांग अंतरराष्ट्रीय स्तर की पैराशूटिंग स्पर्धा के लिए हुआ। अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी वे कई मेडल जीत चुके हैं।

आपको बता दूँ कि संजीव जी हमारे ही परिवार अर्थात् भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग परिवार के ही एक सदस्य हैं, जोकि फिलहाल चेन्नई में प्रधान महालेखाकार कार्यालय में लेखापरीक्षक के पद पर कार्यरत हैं। इस विभाग से वो प्रथम खिलाड़ी हैं जिनका इस प्रतियोगिता में चयन हुआ है। दिव्यांग संजीव कुमार गिरि जी ने बताया कि नौकरी के दौरान शुरुआत में उन्हें सुबह और रात को ही अभ्यास करने का अवसर मिलता था, लेकिन एक दर्जन राष्ट्रीय पदक जीतने के पश्चात उन्हें विभागीय स्तर पर भी पूरा सहयोग मिलने लगा, नतीजतन उनका चयन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुआ।

संजीव गिरि जी की रुचि सिर्फ पैराशूटिंग तक आकर नहीं रुकी, उन्हें शिक्षण, चित्रकला, तैराकी, संगीत एवं पर्यटन में भी गहरी अभिरुचि है। उन्होंने अपने कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका और साथ में सी.ए.जी. मुख्यालय कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' में भी अपने लेख, कविताएँ देकर एक लेखक/कवि के रूप में भी अपने एक और हुनर को भी दर्शाया है। इनका कलम नाम 'बिंदास' है और स्वभाव से भी ये अपने कलम नाम के अनुरूप हैं – स्वभाव के सरल, शिष्ट और बिंदास।



संजीव गिरि जी एक ऐसे उत्कृष्ट उदाहरण हैं जिनसे हम यह सीख सकते हैं कि मनुष्य यदि ठान ले तो कुछ भी हासिल कर सकता है। स्वयं पर भरोसा और आत्मविश्वास हो तो हर चुनौती का सामना कर सकता है। भाग्य के भरोसे न रहकर स्वयं पर भरोसा करना ही मानव के लिए आवश्यक है। खुद को चुनौती देकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना ही जीवन है।

स्वयं को टटोलिए.....खुद को पहचानिए..... हो सकता है.....खुद में ही एक अमूल्य रत्न छुपा हो....एक हीरा हो जिसे सिर्फ स्वयं ही तराशने की जरूरत हो..... !!!

1. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है: महात्मा गांधी
2. हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है: समित्रानंदन पंत
3. सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपी आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है: जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर
4. हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता: पंडित गोविंद बल्लभ पंत
5. हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है: कमलापति त्रिपाठी

हर्षोउल्लास का पर्व- पोंगल

सुश्री रति कु. लहेरी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक



भारत उत्सवों और त्योहारों की भूमि है। विभिन्न राज्यों में कई प्रकार के पर्व हर्ष और उल्लास के साथ मनाए जाते हैं। इनमें से ही एक महत्वपूर्ण पर्व है पोंगल जो तमिलनाडु में मनाया जाता है।

यह पर्व किसानों के लिए विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह कृषि से जुड़ा हुआ है। चावल तमिलनाडु का प्रमुख कृषि उत्पाद है। दिसम्बर के अंत तक चावल की खेती के बाद किसान इस पर्व को बहुत धूम धाम से मनाते हैं।

हरियाली और सम्पन्नता को समर्पित पोंगल तमिलनाडु का एक प्राचीन त्योहार है। पोंगल के दिन भगवान सूर्यदेवता की पूजा अर्चना की जाती है और भोग लगाया जाता है। भगवान को जो प्रसाद भोग लगाया जाता है उसे ही पोंगल कहा जाता है। इस त्योहार का संस्कृत के पुराणों और प्राचीन तमिल ग्रंथों में भी उल्लेख मिलता है।

पोंगल का यह पर्व तीन दिनों तक मनाया जाता है। पर्व के पहले दिन को भोगीपोंगल के नाम से जाना जाता है। इस दिन तमिलनाडु के प्रत्येक घर में चावल बनाया जाता है। लोग इंद्रदेवता के सम्मान में अपने घरों में भोज का भी आयोजन करते हैं। चावल के अलग अलग अनेक पकवान बनाते हैं।

पर्व के दूसरे दिन भगवान सूर्यदेवता की पूजा की जाती है। इसे सूर्यपोंगल कहा जाता है। अच्छी फसल उगाने में सूर्य देवता का महत्वपूर्ण योगदान होता है इसलिए किसान इस दिन भगवान सूर्यदेवता की पूजा करते हैं। महिलाएं सूर्यदेवता का प्रारूप भी बनाती हैं।

तीसरे दिन माट्टुपोंगल के नाम से जाना जाता है। इस दिन किसान गाय की पूजा करते हैं। गायों को अच्छे से नहलाया जाता है, उसके सींग पर रंग किये जाते हैं। उन्हें अच्छे पकवान खिलाये जाते हैं।

पोंगल दक्षिण भारत में विशेषकर तमिलनाडु में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाने वाला त्योहार है। इस दिन यहां बैलों की लड़ाई (जिसे जल्लिकट्टु के नाम से जाना जाता है) भी कराई जाती है। तमिलनाडु में मनाया जाने वाला पोंगल बहुत कुछ गोवर्धन पूजा और मकर संक्रांति के जैसा ही होता है। हमारे देश में नाम भले ही त्योहारों के अलग अलग हो पर उन्हें मनाने का उद्देश्य सबका एक ही है खुशी और उल्लास ।



तू चांद ही क्यों कहलाता है?

श्री आयुष कुमार
लेखाकार



दिन सूरज ढल जाते ही
रातों को तू क्यों आता है?
क्या दिशा तुम्हारे आने की
क्यों भोर किरण संग जाता है?

क्यों पूर्णिमा रात है होती
जिस रात तू पूरा होता है,
जिस रात तू हो बिल्कुल भी नहीं
क्यों वह अमावस कहलाता है ?

रश्मि तेरी कितनी उज्ज्वल
फिर क्यों तपिश बिल्कुल भी नहीं,
क्यों रंग तेरा इतना मोहक
हो चाहे तुझ पर दाग सही?

कभी आधा तू कभी पूरा
कभी बिल्कुल न दिख पाता है,
क्यों दाग तुम्हारे दामन में
'तू चांद ही क्यों कहलाता है' ?



क्यूँ...

श्री भूषण कुमार
लेखाकार



न जाने क्यूँ आज रोने का मन किया,
सब कुछ छोड़ सब खोने का मन किया,
ज़िन्दगी के संघर्ष से थक हार के,
माँ के आँचल में सोने का मन किया.....

क्यूँ वक्रत की गुत्थियां सुलझती नहीं,
क्यूँ आंखें सही समय पर खुलती नहीं,
न जाने क्यूँ ये प्यास बुझती नहीं,
क्यूँ साफ शीशे में भी रूह दिखती नहीं
रोज सपनों में बातें करता हूँ मैं,
क्यूँ उन सपनों से आवाज़ें आती नहीं,
क्यूँ सूरज की रोशनी मुझे जगाती नहीं,
क्यूँ यादें अब जख्म मुझे बताती नहीं.....

झूठ बोलता हूँ रोज खुद से मैं,
कि किसी शाम तो बहारेँ आयेंगी,
ज़िन्दगी मुझको फिर से मनाने आयेंगी,
मेरे ख्वाबों को सपनों में सजाने आयेंगी.....

दिल तोड़ा है अपनी बातों से मैंने,
कि आज दिलों को जोड़ने का मन किया,
सच को सबसे बोलने का मन किया,
यादों को संग लेकर रोने का मन किया.....



दर्द जो दिल में रखा था अभी तक ,
न जाने क्यूँ तुमसे कहने का दिल किया,
बहक गए थे जो रास्ते चलते-चलते,
न जाने क्यूँ उनमें बहने का दिल किया...

तू अकेला ही काफी है

श्री भूषण कुमार
लेखाकार



उठाओ अपनी ताकत से तलवार को
बढ़ रही चुनौतियों पर प्रहार कर
हो गलत कुछ भी, उससे पहले ही
तू छिपे शत्रुओं का संहार कर
तू अकेला ही था और अकेला ही बढ़,
युद्ध के लिए खुद को तैयार कर
एक आवाज के साथ हजारों गूंजेगी
पीछे से नहीं तू सामने से वार कर
फटेंगे कपड़े, रक्त भी निकेलगा
पर माटी से तू खुद का श्रृंगार कर,
थकान तो होगी, प्यास भी लगेगी,
पर पानी की जगह खुद में अंगार भर
उठाओ अपनी लफ्जों की तलवार को
बढ़ रही खामोशी पर प्रहार कर ।



एक कवि तो हम भी है

श्री राहुल कुमार महतो
लेखाकार



सुना हैं कविताएं लिखने वाला कवि,
और संसार को उजाला देने वाले रवि कहलाते हैं।
पर एक कवि तो हम भी हैं,
अपने भविष्य का अंधकार दूर करने वाला रवि तो हम भी हैं।

माता-पिता ने बचपन में ही बोलना सिखाया,
पर क्या बोलना है अभी तक न आया,
बड़ो और वरिष्ठों को तुम या तू बोलकर पुकारते हैं,
और जब छोटा हमसे वही शब्द बोले, तो रोष करते हैं।
स्पष्टतः इस आचरण का कवि हम ही है,
और इस आदर के अंधकार को दूर करने वाला रवि हम ही हैं।

अनुशासन में तो हमेशा से रहे हैं,
मंजिल पाने के लिए मेहनत भी किए हैं,
पाए हैं वह सारे चीज जिसकी तमन्ना हमने की थी,
पर न जाने क्यों, अक्सर कुछ ना कुछ कमी रह जाती है,
मन में हमेशा एक असंतुष्टि की लहर दौड़ जाती है।
तो सफलता में खुशियां ढूंढने वाले कवि हम ही हैं,
और दुख में भी खुश रहने को सफलता मान लेने वाला रवि हम ही हैं।

पुरानी बातों को लेकर परेशान होना,
जो चीजें नहीं हो सकी उसका हमेशा रोना रोना,
कि यह हो जाता तो अजब हो जाता, वह हो जाता तो गजब हो जाता।
ऐसी परिकल्पना से खुद को परेशान करने वाला कवि हम ही हैं,
और इस व्यथा से क्षण भर में अपने आप को दूर कर लेने वाला रवि हम ही हैं।

सोचा कार्यों और जिम्मेदारियों की उपेक्षा करके जिंदगी का आनंद लूँ,
इस भाग दौड़ भरी जिंदगी से कहीं दूर जाकर, मन को आमोद और प्रमोद कर लूँ,
पर अंततः यह समझ आया, कि जिंदगी का असली आनंद अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में है,
पूरी सामर्थ्यता के साथ अपने कार्यों को संभालने में हैं।
तो अपने आप को गैर-जिम्मेदार और जिम्मेदार बनाने वाला कवि हम ही हैं,
और अपने रोजमर्रा की कार्यों को आनंद पूर्वक बनाने वाला रवि हम ही हैं।



मातृ दिवस

श्री सौरभ शर्मा
लेखाकार



एक माँ बच्चे की पहली शिक्षक होती है और सबसे अच्छी दोस्त भी होती है। क्योंकि वह अपने बच्चे को समस्त आवश्यकताओं का ध्यान रखती है, जिसकी हमको आवश्यकता होती है। प्रत्येक माँ को आदर और सम्मान देने के लिए वर्ष में एक दिन मातृ दिवस के रूप में मनाया जाता है। एक माँ कई रूपों में अपने बच्चे के जीवन को संभालती है। कभी शिक्षक, कभी मित्र के रूप में वह सारे दायित्वों का वहन करती है। माँ का बच्चे के जीवन के ऊपर प्रभाव का पता इस बात से चलता है कि जब भी बच्चे को चोट लगती है तो उसके मुख से पहला शब्द "माँ" ही निकलता है।

बच्चा जब असफल होता है तो सबसे ज्यादा दुख माँ को ही होता है। हम चाहे कितने ही बड़े क्यों न हो जाए, माँ हमारे लिए हमेशा वैसे ही रहती है। माँ का साथ और उसका लगाव ताउम्र रहता है। एक शायर ने कभी कहा था "लबों पे उसके कभी बददुआ नहीं होती बस एक माँ ही है जो मुझसे खफा नहीं होती।"

जो माँ बचपन से बड़े होने तक हमारा साथ कभी नहीं छोड़ती है उसका उपकार हम कभी पूरा नहीं कर सकते हैं। हमारे ये प्रयास बताते हैं कि माँ हमारे लिए क्या महत्व रखती है। सबके लिए अपने चेहरे पर मुस्कान रखने वाली माँ को खुद मुस्कुराने दें और यह संभव है हमारे इन प्रयासों से।



एक आह्वान

श्री शिवजी पांडेय
वरिष्ठ लेखाकार



जग का मालिक जाग रहा है न तू
अगर जगा हुआ है तो देख न सही
कैसा तेरा जग विनाश के रास्ते चल पड़ा है
और ये तेरी रणनीति नहीं है
तो इसे रोकता क्यों नहीं?

बच्चे भगवान और उनके माँ बाप
तेरे रूप, उनका ध्यान रखने को
पालनकर्ता और पालन पाता दोनों क्यों
इस ऊहापोह में!

हो सके तो हमें समझाओ
अगर समझ सके तो ।
जब से ये धरती मानव सहित हुई
तब से संघर्ष झेल रही
लाल पूरी मानवता और खुद बंजर हो रही!

तू कर्ता धर्ता, करता कुछ क्यों नहीं।
या ये तेरी योजना हैं समस्या के अंत का
हमें अपने ही जाल में फँसाकर
सीख देने की और अपनी धरती फिर से
वापस पाने की!

कुछ तो है जो बता नहीं रहा
बता भी रहा तो हमको सुनाई क्यों नहीं दे रहा।
या सुनने वाले कोई और
और उलझे कोई और
कब तक ये चलेगा
करता क्यों नहीं सबको एक !

मालूम है हमें, तू है ही नहीं कहीं
फिर भी सब तुझपे छोड़े बैठे हैं
करना था सब हमको
इलज़ाम तुझपे थोपते हैं
नहीं संभले अगर समय पर
कौन जाने क्या इनाम इंतज़ाम करके बैठे हैं!



कर्म - धर्म का एक रूप

सुश्री तनु शर्मा
लेखाकार



"कर्म करो तो, फल मिलेगा
आज नहीं तो, कल मिलेगा
कर्म ही जीवन, का है सार
बिना कर्म के, जीवन है बेकार
कर्म को जो देता सम्मान
जिंदगी देती, उसको ऊँचा मुकाम
कुआँ खोदोगे तो, श्रम लगेगा
प्यास बुझाने को, जल मिलेगा "

जब हम कर्म (काम) और धर्म (पूजा) दोनों की एक साथ बात करते हैं तो हमें दोनों शब्दों का सही अर्थ समझना बहुत जरूरी हो जाता है।

"कर्म का अर्थ- हमारे द्वारा किए गए प्रयास व हमारी उस कार्य के लिए की गई कड़ी मेहनत तथा धर्म का मतलब है - आराधना। कर्म तथा धर्म एक दूसरे के पूरक हैं। किसी कार्य को अपना आराध्य समझकर उसकी आराधना करना "कर्म ही धर्म" कहलाता है।

खुश रहना चाहते हो, अपनी मंजिल को पाना चाहते हो, जीवन में सफल होना चाहते हो, तो मोह को त्यागकर, सुख-दुख, फायदे और नुकसान को छोड़कर जीत की तैयारी करो, फल की चिंता किए बिना केवल कर्म करो। हर प्रकार के भय की भावना, शुभ-अशुभ का डर आदि का त्याग कर दो, गुस्से पर नियंत्रण स्थापित करो, अपनी इच्छाओं को गुलाम बनाओ, साथ ही स्वयं से निर्णय लेने की क्षमता का विकास करो। कर्म-योग को अपना लेना ही आपका कर्तव्य है।

सदैव यह स्मरण रखिए कि - शरीर से ज्यादा शक्तिशाली है, इन्द्रियाँ, इन्द्रियों से ज्यादा शक्तिशाली है मन, मन से ज्यादा शक्तिशाली है बुद्धि एवं बुद्धि से ज्यादा शक्तिशाली हैं आप अर्थात् आपकी 'आत्मा'। तात्पर्य है कि - आपको अपने कर्म पर विजय प्राप्त करने के लिए आपको अपने आप पर विजय प्राप्त करनी होगी। जो इंसान अपने मन पर नियंत्रण कर लेता है वह सबसे बड़ा योद्धा होता है, चंचल एवं हठीले मन को एक स्थान पर विश्राम दो ऐसा करने के लिए आपका आत्मविश्वासी होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि आत्मविश्वास ही ऐसी चीज है जिसके रहते आप किसी कार्य को असंभव से संभव बनाने का साहस एकत्र कर सकते हैं।

निरंतर प्रयास एवं प्रयत्न करना मनुष्य की सबसे बड़ी कल्याणकारी योजनाओं में से एक है। प्रयत्न के माध्यम से मनुष्य कर्म से जुड़ा रहता है। देखा जाए तो कर्म ही जीवन है, और मनुष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य भी।

कुछ लोगों का मानना है कि व्यक्ति का कर्म उसके कुल अथवा वंश से निश्चित होता है जिसमें उसने जन्म लिया है परन्तु ऐसी विचारधारा उचित नहीं है क्योंकि यदि हम कमल के पुष्प का उदाहरण लें तो कमल की जीवन यात्रा विचित्र होती है, जन्म लेता है कीचड़ में, परन्तु उस कीचड़ से अपने अस्तित्व को मलिन नहीं होने देता इसी प्रकार व्यक्ति किन परिस्थितियों में जन्मा है, किस कुल से संबंध रखता है ये उसका भविष्य निर्धारित नहीं करता अपितु उसके कर्मों का चयन उसके भविष्य का निर्माण करता है इसलिए श्रेष्ठ भविष्य प्राप्त

करने के लिए कर्मों का चयन भी श्रेष्ठ होना चाहिए। प्रमुख धार्मिक ग्रंथों में से एक ग्रंथ है 'गीता' जिसमें निम्न श्लोक का वर्णन है -

"कर्मव्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते. संगोडस्त्वकर्मणि ॥

उपरोक्त श्लोक का अर्थ यह है कि- आपका कर्तव्य मात्र कर्म करना है न कि कर्म के फल की आशा करना इसलिए आपके कर्म करने का आधार फल प्राप्ति नहीं होना चाहिए अपितु अपने कर्म के प्रति आसक्ति होनी चाहिए।

नकारात्मकता का त्याग कर, सकारात्मकता के पथ पर चलकर निश्चित ही आप अपने जीवन की समस्त क्रियाओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

अतः कर्म को धर्म मानकर उसकी उपासना करने से ही मानव वास्तविक मानव बनता है क्योंकि "कर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं होता" इसलिए यह कहना उचित होगा कि "कर्म ही धर्म है।"



बची रहनी चाहिए

श्री विवेक कुमार
लेखाकार



बची रहनी चाहिए

कुछ बातें, कहने को
कुछ यादें, ज़िंदा रहने को
कुछ खामोशी, सुनी जाने को
कुछ सफर, तय करने को,

बची रहनी चाहिए

कोई नदी, सागर में समाने से
कोई गली, गुज़र जाने से
कोई जंगल, जल जाने से
कोई बर्फ, पिघल जाने से,

बची रहनी चाहिए

कोई चिड़िया, चहचहाने के लिए
कोई पेड़, छाँव लाने के लिए
कोई शाम, दोस्तों से मिलवाने के लिए
कोई प्रेयसी, सपनों में आने के लिए,

बचा रहना चाहिए

कोई किसान, भूख मिटाने को
कोई शिक्षक, जीवन की राह दिखाने को
कोई नाविक, सागर पार कराने को
कोई माली, सुंदर फूल खिलाने को,

बची रहनी चाहिए

कुछ कहानियाँ, कही जाने को
कुछ गीत, गाए जाने को
कुछ धुन, छेड़ी जाने को
कुछ कविता, लिखी जाने को,

बची रहनी चाहिए



ईमानदारी- एक जीवन शैली



सुश्री पुष्पा शेषाद्री
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

थॉमस जेफ़र्सन ने कहा है “Honesty is the first chapter in the book of wisdom “ यानि विवेक की किताब का पहला अध्याय ईमानदारी है। यानि एक व्यक्ति जो ईमानदारी को अपने जीवन में आत्मसात कर लेता है वही विवेकपूर्ण साबित होता है। क्षणिक प्रलोभनों में न फँसकर जो अपने संयम को कायम रखता है और जो सच्चाई के रास्ते पर अडिग रहता है वही अपने जीवनकाल में पूरी तरह संतुष्ट रहता है और किसी भी प्रकार के भय के बिना अपना जीवन व्यतीत कर सकता है।

सामान्य जीवन में एक व्यक्ति को कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, परंतु इन समस्याओं का सामना उसे अडिग रहकर करना होगा और अपने अंतरात्मा की आवाज़ को नकारे बिना सच्चाई के पथ पर चलना होगा तभी उसका व्यक्तित्व सदैव दूसरों के लिए अनुकरणीय होगा।

जीवन के संघर्ष में ही हमारे यथार्थ जीवन की परीक्षा होती है। कोई भी व्यक्ति अगर संक्षिप्त रास्ता अपनाकर सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है और अगर वह ऐसा करने का प्रयत्न करता है तो ऐसी सफलता क्षणभंगुर होती है। सच्चाई से कमाई गई दौलत ही आपको असल मायने में आत्मसंतोष प्रदान करती है और वो बेखौफ अपनी ज़िंदगी व्यतीत करता है।

अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को बाल्यकाल से ही अनुशासन, सच्चाई और ईमानदारी का पाठ सही ढंग से पढ़ाएँ और प्रेम भाव से उनकी गलतियों को सुधारने का प्रयास करें ताकि वे किसी भी प्रकार के मानसिक दबाव में न रहे और उनका आत्मविश्वास सुदृढ़ हो सके। आगे चलकर जब वे किसी भी संस्था से जुड़ें तो उनमें इतना संबल हो कि वे किसी भी परिस्थिति में अपने कार्यालयीन दायित्वों के आचरण में कोई भी गलती न करें या अपने पद का प्रयोग अनुचित लाभ के लिए करें।

ठीक उसी प्रकार एक बालक के सामने उसके माता-पिता को एक आदर्श स्थापित करना होता है ताकि उसकी परवरिश में उनके द्वारा कोई त्रुटि न हो सके। बच्चा उनके द्वारा किए गए कार्यों को ध्यानपूर्वक देखता है और उनका अनुकरण करने लगता है। अतः उसे धन दौलत की चकाचौंध से दूर रखना चाहिए और जिम्मेदार इंसान बनाना चाहिए ताकि वो नैतिकता की राह को अपना सके।

किसी ने खूब कहा है, “ईमानदारी वैभव का मुंह नहीं देखती है, वह तो मेहनत के पालने पर किलकारियाँ मारती है”।



अपनी जरूरतों को सीमित रखकर, मेहनत और लगन के बलबूते पर कमाया जाने वाला धन आदमी को तृप्त करता है और उसे शांति का एहसास होता है। हमेशा चादर के भीतर ही पैर फैलाएँ तो किसी भी अनजाने खतरों का सामना न हो।

हमेशा अपने विचारों, शब्दों और कर्म के पूर्ण सामंजस्य का लक्ष्य रखें। हमेशा अपने विचारों को शुद्ध

करने का लक्ष्य रखें और सब कुछ ठीक हो जायेगा। ~ महात्मा गाँधी।

आग..... जरूरी है

सुश्री रति कु. लहेरी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



सर्द रातों में ठिठुराने लगता है जब शरीर,
और उसके साथ इंसानी मस्तिष्क
तब उसे चाहिये आग
आग, लड़ने के लिए अंधे ठंड से
आग जरूरी है

जिंदगी में सोई हुई आत्मा जगाने के लिए
जब इंसान की बुद्धिमत्ता सुप्त होने लगे
जब इंसान अपनी विवेकशीलता खोने लगे
जब इंसान की शक्ल में दिखने लगे जानवर
तब उसे आग के हवाले कर देना चाहिए

शुद्धि के लिए
जलेगा, तपेगा, निखरेगा
खरा सोना बनेगा
घसीटा जाएगा, तोड़ा जाएगा,
भोथर हथौड़े से पीटा जाएगा बार - बार..... लगातार,
गिरेगा - उठेगा, खड़ा होगा
फिर लगातार अनवरत मिलों दूर चलेगा
वास्तविकता की तलाश में

वह पूछेगा सवाल
और मांगेगा जवाब
उन बंद सिले होठों से
जिन्होंने उसके भूख को छला है
मगर बंद सिले होंठ जुबान नहीं खोलेंगे,
चुप रहेगा और मुस्कुरायेगा
बहुत हुआ तो नई नई कहानियां सुनाएगा
डरायेगा, सताएगा, तड़पायेगा
फिर अपने जाल में फंसायेगा
अपनी कलाबाजियों से कर देगा सबको मौन
फिर पूछेगा भाई तुम हो कौन ?



उसे कुछ पल हैरत होगी
कि गूंगों की आत्मा कैसे बोल उठी ?
वह कुछ पल सोचेगा....
किसने इसके अंदर आग लगाई ?
किसने इसके अंदर इंसानियत जगाई ?
अब इस सवाल का जवाब देगा कौन ?

मैं..... नहीं ! आप..... नहीं ! तब..... फिर कौन ???

दफ्तर

श्री सिरिगिरि रवि कुमार
डीईओ



दफ्तर की सुषमा, काम की धुन
हर रोज़ भागदौड़ में, हमें मिले सुकून
फाइलों की गठरी, बैठकों में चर्चा
इन छोटे-छोटे पलों में, खुशियों का करते हम खर्चा।

सम्मेलन की बैठकें, जहाँ हम चमकते
सुबह कॉफी के प्याले, मन को सुकून हैं देते
व्यस्तता के बीच में, हँसी के फुहारें
इन मीठे पलों में, दिल करीब हैं आते।

दफ्तर की भागदौड़ में, प्रगति हम करते
सहकर्मियों व पेंशनरों का भरोसा, खजाने सा संजोते
पाँच दिनों में सिर्फ काम, सप्ताहांत में उड़ान भरते
इन छोटी-छोटी बातों में, शांती हम पाते।



हिंदी

सुश्री ज्योति वर्मा
आशुलिपिक



आफिस, घर या हो बाजार
हिंदी में होते सारे कार्य।
कम्प्यूटर भी हिंदी जाने
बस तू ही एक दूरी ठाने ॥

नहीं जरा सी मेहनत लगती
हिंदी जब है दिल में बसती।
छोटी- सी शुरुआत है करनी
फिर हिंदी चुपचाप है बहनी ॥

अपनी भाषा में जो दम है
विदेशी में काफी कम है।
कर लो अब हिंदी में काम
फुल स्टाप से पूर्ण विराम ॥

मातृ-भाषा को सफल बना लो
बचे - खुचे भी हिंदी अपना लो



नारी और प्रकृति

सुश्री विजयलक्ष्मी शंकर
सहायक लेखा अधिकारी



प्रकृति की गोदी में, जीवन खिलता है,
हर मौसम की सरगम, नयी राह दिखलाता है।
नारी की हर सुबह, नयी उम्मीद लाती है,
हर दर्द की बुनाई, एक नई राह बनाती है।

वृक्ष की शाखाएँ, बेतहाशा फैलती हैं,
प्रकृति की विविधता, सहनशीलता दिखाती हैं।
नारी की भी कोख, जीवन को सृजन देती है,
फूलों की तरह महक, उसकी आभा सजाती है।

धरती की हर घाटी, संघर्ष की कहानियाँ छुपाती है,
तूफानों की चुप्पी, भी एक संदेश सुनाती है।
नारी की भी जिंदगानी, समस्याओं की लहर से गुज़रती है,
सपनों की चादर में, चुनौतियों से टकराती है।

बर्फ की चादरें भी, सर्दी की चुभन सहती हैं,
सूरज की गर्मी, नई ऊर्जा को तरसती हैं।
नारी की धड़कनें, समाज की बेड़ियाँ तोड़ती हैं,
हर दर्द की कहानी, एक नयी उम्मीद जोड़ती हैं।

समाज की गूंज में, आवाजें कहीं खो जाती हैं,
नारी की चुप्पी भी, कभी अनसुनी हो जाती है।
लेकिन उसका संघर्ष, सहर की सुबह लाता है,
प्रकृति के साथ, उसकी अनकही बात साझा करता है।

प्रकृति और नारी, दोनों का मेल अमूल्य है,
सहनशीलता और शक्ति का, अद्वितीय यह खेल है।
चुनौतियों की धुन पर, जीवन को सजाना है,
प्रकृति की तरह नारी को, हर पल संवारना है।



यात्रावृत्तांत: मानसून की रहनमाई

सुश्री विजयलक्ष्मी शंकर
सहायक लेखा अधिकारी



परिचय

हमारी यात्रा एक उत्सुकता और प्रत्याशा के मिश्रण के साथ शुरू हुई। अपनी दोपहिया गाड़ी पर, मेरे दोस्त और मैंने पुणे से सासवड रोड होते हुए श्री बलाजी मंदिर के लिए रवाना हुए, और मानसून की बारिश ने हमारे साहसिक यात्रा में अपनी कहानी बुन दी।

आरंभ बिंदु: पुणे

जब हम पुणे से बाहर निकले, तो शहर की हलचल की आवाज धीरे-धीरे बारिश की बूंदों की सुखद धुन में बदल गई। हवा ठंडी और ताजगी से भरी थी, और हर बूंद जो हमारे चेहरे पर गिरी, ऐसा लगता था जैसे शहर का तनाव धुल गया हो। बारिश ने हमारी यात्रा की साधारण शुरुआत को एक जादुई रूप में बदल दिया, जो आगे की यात्रा के लिए एक विशेष वातावरण बना दिया।

यात्रा: पुणे से सासवड

बारिश में पुणे-सासवड रोड पर दोपहिया चलाना जैसे एक जीवित चित्र का हिस्सा बनने जैसा था। सड़क, जो हाल की बारिश से चमकर रही थी, एक हरे-भरे परिदृश्य से गुजर रही थी। पहाड़ियों पर लिपटी धुंध ने चारों ओर एक अद्भुत गुण दे दिया, जिस से हर मोड़ एक नई खोज बन गई।

बारिश ने अपनी चुनौतियाँ भी लाई—फिसलन वाली जगहें और कम दृश्यता—लेकिन इसने हमारी साहसिकता की भावना को भी बढ़ा दिया। हर सतर्क कदम के साथ, मेरे दोस्त और मैं एक साझा रोमांच का अनुभव कर रहे थे, और यात्रा को अधिक तीव्रता से महसूस कर रहे थे। बारिश से चूमें परिदृश्य की सराहना करने और सड़क के किनारे के स्टालों से चाय पीने के लिए कभी-कभार रुका जाना, अनमोल पल बन गए, क्योंकि चाय की गर्माहट ने ठंडी, गीली हवा के साथ एक सुंदर विरोधाभास प्रस्तुत किया।

सासवड में आगमन

सासवड में पहुंचना जैसे एक शांत, बारिश से धोए हुए स्वर्ग में कदम रखना था। नगर शांत था, और कोबलस्टोन सड़कें हल्की बारिश में चमक रही थीं। गीली मिट्टी की खुशबू और हमारे हेलमेट पर बारिश की मुलायम आवाज ने हमारे ठहरने को एक नई शांति प्रदान की। हमने स्थानीय नाश्ता का आनंद लिया, जिनके स्वाद बारिश के माहौल से और भी समृद्ध हो गए, और इस शांत, छोटे शहर के वातावरण से गहरा जुड़ाव महसूस किया।

श्री बलाजी मंदिर

श्री बलाजी मंदिर की अंतिम यात्रा रोमांचक और शांति देने वाली थी। जैसे ही हम करीब पहुंचे, मंदिर धुंध से एक शांति का प्रतीक बनकर उभरा। बारिश ने मंदिर की भव्यता को और भी बढ़ा दिया, बूँदें छत पर एक शांतिपूर्ण संगीत बना रही थीं। अंदर कदम रखते ही, हमें मंदिर का सौम्य, दिव्य वातावरण मिला।

शांतिपूर्ण वातावरण को बारिश की नरम धुन ने और भी बढ़ा दिया। हर कदम पर हमें श्रद्धा और शांति का अहसास हुआ। बारिश से भरी शांति के बीच भगवान बलाजी की उपस्थिति और भी गहराई से अनुभव हुई। पल बहुत ही भावुक था, जैसे बारिश ने हमारे लिए एक पवित्र स्थान बना दिया हो, जिससे आध्यात्मिक अनुभव और भी गहरा हो गया और हमें गहरी आभार और आंतरिक शांति का अहसास हुआ।

हमारी पुणे से श्री बलाजी मंदिर की यात्रा, जो हमने मानसून की बारिश के साथ अपनी दो पहिया गाड़ी पर की, एक गहन और यादगार अनुभव था। बारिश, जो पहले केवल एक पृष्ठभूमि लग रही थी, हमारी साहसिकता का एक अभिन्न हिस्सा बन गई, यात्रा को आश्चर्य और शांति का अहसास कराया। यह यात्रा सिर्फ एक साधारण सवारी नहीं थी; यह एक समृद्ध अनुभव था जिसने हमें अनमोल यादें दीं और प्रकृति और आध्यात्मिकता के प्रति नई सराहना प्रदान की।



योग - बेहतर और स्वस्थ जीवन के लिए एक अभ्यास

श्री के.गोपीनाथ
पर्यवेक्षक



“मन की शांति खुशी है और स्वास्थ्य ही धन है! योग दोनों को प्राप्त करने का एक तरीका दिखाता है।”
- स्वामी विवेकानंद।

शरीर के लिए कभी भी छुट्टी नहीं होती, स्वास्थ्य ही धन है, शरीर का कभी दुरुपयोग न करें, खुद से कहें कि मैं "सबसे मजबूत और शक्तिशाली हूँ।"

पिछले कई वर्षों में, योग ने चिकित्सा पेशेवरों और पश्चिमी दुनिया में भी लोकप्रियता हासिल की है। योग एक उत्कृष्ट अभ्यास के रूप में जाना जाता है जो ध्यान, शारीरिक व्यायाम (आसन या मुद्रा) और नियंत्रित श्वास की प्रक्रिया के माध्यम से मन, आत्मा और शरीर को जोड़ता है। योगिक विज्ञान का जन्म वैदिक काल से हुआ है, और इसके विभिन्न अभ्यासों ने बेहतर स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती में कई मानव पीढ़ियों को प्रभावी रूप से प्रभावित किया है। हम सभी ने सुना है कि अपने दैनिक जीवन में योग को शामिल करने से सकारात्मक जीवनशैली अपनाने में मदद मिलती है और हमारे जीने के तरीके में बदलाव आता है।

योग के चार प्राथमिक पहलू :

- 1. श्वास के लिए प्राणायाम:-** जीवन श्वास पर चलता है और इसलिए योग का दर्शन श्वास को अपार शक्ति के स्रोत के रूप में पहचानता है। लगातार, नियंत्रित और गहरी साँस लेने और छोड़ने से शरीर को शुद्ध ऑक्सीजन मिलती है, और इस प्रकार इसे रक्त को गर्म करके उसमें मौजूद अशुद्धियों को हटाने के अभ्यास के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसके अलावा, प्राणायाम मस्तिष्क की निर्णय लेने की शक्ति को बढ़ाता है और उसे अपनी पूरी क्षमता से काम करने के लिए पर्याप्त मात्रा में ताज़ी हवा देता है।
- 2. ध्यान के लिए ध्यान:-** ध्यान घंटों काम करने के बाद दिमाग को तरोताजा करने में मदद करता है। यह तनाव को कम करके और आंतरिक शांति को बढ़ावा देकर दिमाग को ठीक करता है। ध्यान मन को एकांत की स्थिति में ले जाता है जहाँ व्यक्ति को शांति मिलती है, जो धीरे-धीरे हमें अपनी जीवनशैली में तनाव के क्षणों के दौरान भी शांत रहने में मदद करती है। सुबह का ध्यान इसका अभ्यास करने का सबसे आदर्श तरीका है, क्योंकि प्रशिक्षक उपदेश देते हैं कि दिन की शुरुआत शांत मन से करने से मस्तिष्क पूरे दिन शांत रहता है।
- 3. मंत्र जाप:-** सकारात्मकता आपके जीवन और आपके जीवन जीने के तरीके को प्रभावित करती है। निराशावादी व्यक्ति कभी भी पूर्ण स्वस्थता की स्थिति प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि वे सिक्के के नकारात्मक पक्ष को देखकर तनाव, नकारात्मकता और अवसाद को आकर्षित करते हैं। मंत्र जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण का एक बड़ा स्रोत हैं और 'ओम' को सबसे मजबूत मंत्रों में से एक माना जाता है क्योंकि यह सभी आध्यात्मिक ज्ञान का मूल है। ध्यान करते समय 'ओम' का उच्चारण करने से पूरे शरीर में ध्वनि कंपन होता है जो आराम करने और सकारात्मक महसूस करने में मदद करता है।

योग आसन या शारीरिक व्यायाम : योग जीवन जीने का एक स्वस्थ तरीका है, और आजकल दुनिया भर में कई लोग फिटनेस के लिए योग को अपना रहे हैं। आसनों का प्राथमिक उद्देश्य शरीर को रोग पैदा करने वाले एजेंटों

से लड़ने के लिए पर्याप्त मजबूत बनाना और हमारे दिमाग को हमारे शरीर से बेहतर तरीके से जुड़ने के लिए विकसित करना है। विभिन्न आसन कई बीमारियों को ठीक करने में प्रभावी रूप से काम करते हैं और जब नियमित रूप से अभ्यास किया जाता है, तो योग मुद्राएँ शरीर को ऊर्जा प्राप्त करने में मदद करने में बहुत उपयोगी हो सकती हैं। आज की दुनिया बहुत व्यस्त, तनावपूर्ण और प्रतिस्पर्धी होती जा रही है, योग हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत ज़रूरी संसाधन है। आइए योग के विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार करें और जानें कि यह हमारी समग्र फिटनेस और सेहत में कैसे मदद कर सकता है।

हम सभी ने सुना है कि योग हमारे शरीर को स्वस्थ रखता है, लेकिन यह तनाव को दूर करके हमारे मन की सेहत को भी बेहतर बनाता है। ज्यादातर लोगों का मानना है कि ध्यान और योग सिर्फ बड़ी उम्र के लोगों के लिए है, हालाँकि, सच्चाई यह है कि उम्र कोई मायने नहीं रखती। योग हर उम्र के लोग कर सकते हैं, चाहे आप 8 साल के हों या 80 साल के, आप अपने शरीर की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए योग कर सकते हैं।

योग के कुछ मुख्य लाभ :

तनाव कम करता है, दर्द से राहत दिलाता है, हृदय स्वास्थ्य में सुधार करता है, मुद्रा में सुधार करता है, आपकी रीढ़ की हड्डी की सुरक्षा करता है, रक्तचाप कम करता है, आपको बेहतर नींद में मदद करता है, पाचन संबंधी समस्याओं को रोकता है।

मन-शरीर संबंध

योग के सैद्धांतिक ज्ञान को प्राप्त करने के बाद, आइए समझते हैं कि उन अभ्यासों को अपनी दैनिक जीवनशैली में कैसे लागू किया जाए। स्वस्थ जीवन जीने के लिए कुछ बुनियादी दिशा-निर्देश दिए गए हैं। स्वस्थ जीवन की शुरुआत सुबह जल्दी उठने के विचार से होती है, उसके बाद ध्यान और श्वास अभ्यास करना चाहिए ताकि बाकी दिन अच्छा रहे। योग कहता है कि लगभग 5-6 घंटे के अंतराल पर हर दिन तीन पौष्टिक भोजन अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं। अपने शेड्यूल के अनुसार, आप अपने ध्यान के बाद या शाम को सूर्यास्त से पहले योग आसन कर सकते हैं। सुनिश्चित करें कि आप रात के खाने के तुरंत बाद सोने के बजाय सोने से 3-4 घंटे पहले खाना खा लें।

सीख:

योग को कई मानसिक और शारीरिक लाभ प्रदान करके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए सबसे अच्छे अभ्यासों में से एक माना जाता है। यह स्वस्थ खान-पान की आदतों को भी बढ़ावा देता है, जिससे बीमारियों से प्रभावित होने की संभावना अपने आप कम हो जाती है और आपके रक्त शर्करा के स्तर या रक्तचाप के स्तर (दिल के दौरे के मुख्य कारणों में से एक) को बनाए रखने में मदद मिलती है।

जीवन हमेशा व्यस्त रहने वाला है, लेकिन स्वस्थ और फिट जीवनशैली जीने और अपने समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए अपने लिए, अपने शरीर और अपने दिमाग के लिए समय निकालना महत्वपूर्ण है। हर दिन अपने लिए कुछ मिनट निकालें और एक संपूर्ण योग अभ्यास करें।



[* श्री के. गोपीनाथ जी योग विज्ञान में पीएचडी हैं]

माता-पिता

सुश्री अंजिता अमन
आशुलिपिक



पिता

हर घर की शान है पिता
बेटे/बेटियों की लिए साहस और सम्मान है पिता
कहने को तो वह बहुत ही सख्त है
पर अंदर से प्रेम की खान है पिता
दिन-रात मेहनत कर जो परिवार की
खुशियों पे जान वार दे, घर की पूँजी
घर की पहचान है पिता ।
कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
जन्म तो माँ ने दिया,
पर जानेगा जग जिससे वह पहचान है पिता
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता।
खुशियों की दुकान और हमारा भगवान है पिता।

माता

'माँ' कहने को तो शब्द बहुत छोटा है
पर ममता से भरा हुआ है।
'माँ' एक तोहफा है तो ईश्वर का दिया हुआ है,
माँ दवा है, दुआ है, तमाम रिश्तों से बंधी
घर की जिम्मेदारियों से लदी,
किसी को बुआ, चाची, किसी की सास है
माँ अन्नपूर्णा का वास है,
हमारी शक्ति हमारा विश्वास है।
जिम्मेदारियों को निस्स्वार्थ भाव से करके,
हर दुख से अंजान है माँ
हमारी धरती, हमारा आसमान है माँ
यूँ कहें तो हमारा जहान है माँ ॥



एक नई पहल :

कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी सीखने, उसमें रुचि जगाने और उसे बढ़ावा देने के लिए वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिंदी के निर्देशानुसार हिंदी कक्ष द्वारा प्रशासनिक हिन्दी शब्द कहावतें/मुहावरें/लोकोक्ति तथा प्रशासनिक वाक्यों को उनके अंग्रेजी लिप्यंतरण और अंग्रेजी अनुवाद सहित प्रतिदिन सभी अनुभागों को इंटरमेल से भेजे जाते हैं। कुछ उदाहरण हैं-

क्र.सं. SL. NO.	शब्द WORD	लोकोक्ति / मुहावरे PROVERB	प्रशासनिक वाक्य ADMINISTRATIVE SENTENCES
1.	पंजीकरण PANJEEKARAN REGISTRATION	“हर संभव प्रयास करें”। HAR SAMBHAV PRAYAS KAREIN. “LEAVE NO STONE UNTURNED”	कृपया अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है। KRIPYA ANUMODANAARTH PRASTUT HAL. SUBMITTED FOR APPROVAL PLEASE.
2.	कर-निर्धारक KAR-NIRDHAARAK ASSESSOR	“एक हाथ से ताली नहीं बजती” EK HAATH SE TAALI NAHI BAJATI. “IT TAKES TWO TO MAKE A QUARREL.”	आगे और आदेश भेजे जाएंगे। AAGE AUR AADESH BHEJE JAAENGE. FURTHER ORDERS WILL FOLLOW.
3.	कोषाध्यक्ष KOSHAADHYAKSH TREASURER	“शांत और रचनात्मक” SHANT AUR RACHNATMAK. “COOL AS A CUCUMBER.”	केवल सूचना के लिए/सूचनार्थ। KEVAL SUCHNA KE LIYE/ SUCHNAARTH . FOR INFORMATION ONLY.
4.	निजी सचिव NIJEE SACHIV PRIVATE SECRETARY	“मान्य और उचित होना” MANYA AUR UCHIT HONA. “TO HOLD WATER.”	“आवश्यक कार्रवाई के लिए”। AAVASHYAK KAARRAVAAEE KE LIYE. “FOR NECESSARY ACTION”.
5.	अनुभव ANUBHAV EXPERIENCE	“शांति निवेदन” SHAANTI NIVEDAN. “AN OLIVE BRANCH.”	“मामले का सारांश नीचे रखा है”। MAAMALE KAA SAARAANSH NICHE RAKHAA HAI. “A BRIEF SUMMARY OF THE CASE IS PLACED BELOW”.
6.	विस्तार VISTAAR EXPANSION	“समझदार को इशारा काफी” SAMAJHDAAR KO ISHAARAA KAAFI . “A WORD TO THE WISE IS ENOUGH.”	“प्रचलित नियमों के अनुसार” PRACHALIT NIYAMO KE ANUSAAR. “ACCORDING TO THE RULES IN VOGUE.”
7.	छूट CHHOOT EXEMPTION	“पूर्ण जानकारी होना” POORN JAANAKAAREE HONAA . “AT ONE’S FINGER ENDS.”	“पावती की प्रतीक्षा है।” PAAVATI KI PRATEEKSHAA HAI. “ACKNOWLEDGEMENT IS AWAITED.”
8.	असाधारण ASAADHAARAN EXTRAORDINARY	“दृढ़ इच्छा शक्ति” DHRIDH ICHCHHA SHAKTI “AN IRON WILL.”	“पत्र की पावती भेजें।” PATR KI PAAVATI BHEJE. “ACKNOWLEDGEMENT RECEIPT OF THE LETTER.”

	FACILITY	“TO BE IN A FIX.”	KIYA JAAE. “ADMINISTRATIVE APPROVAL MAY BE OBTAINED.”
11	प्रशिक्षण अधिकारी PRASHIKSHAN ADHIKAAREE TRAINING OFFICER	“ध्यान में रखना” DHYAAN MEIN RAKHNA “TAKE INTO ACCOUNT.”	“यथा प्रस्तावित” YATHAA PRASTAAVIT. “AS PROPOSED.”
12	तत्काल TATKAAL FORTHWITH	“ध्यान से सुने” DHYAAN SE SUNE “PAY HEED TO.”	“उत्तर का मसौदा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है।” UTTAR KA MASAUDA ANUMODANAARTH PRASTUT HAI. “A DRAFT REPLY IS PUT UP FOR APPROVAL.”
13	मांग-पत्र सहायक MAANG-PATR SAHAAYAK INDENT ASSISTANT	“बहुत कम संतुष्टि” BAHUT KAM SANTUSHTI “COLD COMFORT.”	“पहले से प्रबंध करना जरूरी है।” PAHLE SE PRABANDH KARANAA JAROORI HAI. “ADVANCE ARRANGEMENT ARE NECESSARY.”
14	लेखा अधिकारी LEKHAA ADHIKAAREE ACCOUNTS OFFICER	“आसान प्रगति” AASAAN PRAGATI “SMOOTH SAILING.”	“यह प्रधान महालेखाकार महोदय के अनुमोदन से जारी है।” YAH PRADHAAN MAHALEKHAAKAAR MAHODAY KE ANUMODAN SE JAARI HAI. “THIS ISSUES WITH THE APPROVAL OF PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL.”
15	सूचकांक SOOCHKAANK INDEX NUMBER	“सरसरी निगाह से देखना। SARSAREE NIGAAH SE DEKHNA “BIRD’S EYE VIEW.”	“कृपया अग्रेषित किया जाए।” KRIPYAA AGRESHIT KIYAA JAAYE. “MAY PLEASE BE FORWARDED.”
16	साध्यता SAADHYATAA FEASIBILITY	“आग में घी डालना। AAG ME GHEE DAALANAA “ADD FUEL TO THE FIRE.”	“लेखन-सामग्री की खरीद के लिए अग्रिम मंजूर की जा सकती है।” LEKHAN- SAAMAGRI KI KHAREED KE LIYE AGRIM MANJOOR KI JAA SAKTI HAI. “ADVANCE FOR PURCHASE OF STATIONARY MAY BE SANCTIONED.”
17	वेतन-नियतन VETAN-NIYATAN PAY-FIXATION	“पूर्ण नियंत्रण” POORN NIYANTRAN “RULE THE ROOST.”	“कृपया यात्रा भत्ते के अग्रिम का प्रबंध किया जा सकता है।” KRIPAYAA YAATRAA BHATTE KE AGRIM KAA PRABANDH KIYAA JAA SAKTAA HAI. “ADVANCE OF T.A MAY PLEASE BE ARRANGED.”
18	अंशदान ANSHDAAN CONTRIBUTION	“चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात” CHAAR DIN KEE CHANDANI PHIR ANDHERI RAAT “A NINE-DAYS WONDER.”	अनुमति लेकर अंदर आए।” ANUMATI LEKAR ANDAR AAYEIN. “ADMISSION WITH PERMISSION.”

हिंदी कक्ष के कार्यकलाप

1. भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित राजभाषा नियमों एवं अधिनियमों का कार्यान्वयन।
2. प्रत्येक तिमाही राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन।
3. प्रत्येक वर्ष भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति।
4. वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका "अमृत" का प्रकाशन एवं विमोचन।
5. राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रमानुसार हिंदी कक्ष द्वारा कार्यालय के अनुभागों का 25% राजभाषा हिंदी निरीक्षण।
6. राजभाषा नियम की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज जैसे कार्यालय आदेश, परिपत्र, ज्ञापन आदि और अनुभागों से प्राप्त अन्य दस्तावेज जैसे टिप्पणी, पत्र, प्रपत्र, प्रमाणपत्र आदि का अनुवाद।
7. हिंदी शिक्षण योजना (चेन्नई) द्वारा संचालित हिंदी भाषा पाठ्यक्रमों, हिंदी टंकण, आशुलिपि के लिए स्टाफ सदस्यों को नामांकित करना।
8. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), चेन्नई की बैठकों में भाग लेना और नराकास द्वारा आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं/संगोष्ठियों/कार्यशाला आदि के लिए स्टाफ सदस्यों को नामांकित करना।
9. राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा संचालित हिंदी कार्यशाला, हिंदी टंकण प्रशिक्षण आदि के लिए स्टाफ सदस्यों को नामांकित करना।
10. राजभाषा विभाग, नई दिल्ली तथा सी.ए.जी. मुख्यालय कार्यालय से प्राप्त पत्रों का अनुपालन।
11. सभी रिपोर्टों को यथासमय भेजना।
12. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन।
13. राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित हिंदी दिवस एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में कार्यालय के अधिकारियों एवं राजभाषा से जुड़े सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा सम्मेलन में भाग लेकर हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ करना। तत्पश्चात कार्यालय में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ भव्य समापन समारोह का आयोजन करना।
14. प्रतिदिन एक हिंदी प्रशासनिक शब्द, मुहावरा और टिप्पणी उनके अंग्रेजी लिप्यंतरण व अंग्रेजी रूपांतरण सहित सभी वरिष्ठ लेखा अधिकारियों तथा सहायक लेखा अधिकारियों/पर्यवेक्षकों को इंट्रामेल पर मेल किया जाता है।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में 'ग' क्षेत्र के लिए निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं	मद	लक्ष्य
1	मूल पत्राचार ई-मेल सहित (भेजे गए पत्र)	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55%
2	राजभाषा अधिनियम 1963- धारा 3(3)- (संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट, सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञा-पत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र)	100%
3	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में ही देना	100%
4	टिप्पण- हिंदी में	30%
5	फाइलों व रजिस्ट्रों के नाम/शीर्ष द्विभाषी में और रजिस्ट्रों में प्रविष्टि- हिंदी में	100%
6	सभी बोर्ड, नाम पट्ट, स्टॉप, फॉर्म आदि द्विभाषी में होना	100%
7	कार्यालय की वेबसाइट द्विभाषी में होना	100%
8	सभी कंप्यूटरों में हिंदी यूनिकोड होना चाहिए।	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, साडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%
10	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा टंकण, आशुलिपि) सभी कार्मिकों का हिंदी ज्ञान स्तर/पद अनुसार हिंदी में प्रशिक्षित होना अनिवार्य है।	100%



प्रधान महालेखाकार श्री चि.नेडुन्वेलियन की अध्यक्षता में
राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक



सेवानिवृत्ति समारोह
प्रधान महालेखाकार (मध्य में बैठे हुए)



हिंदी कार्यशाला 2023-24 का सफल आयोजन





महिला दिवस 2024 के सुअवसर पर
मुख्य अतिथि आई.पी.एस.(मध्य),
वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन (दाएं से तीसरी)
तथा उप महालेखाकार/पेंशन (दाएं से दूसरी)





स्वतंत्रता
दिवस
2024 की
झलकियाँ

नगर राजभाषा
कार्यान्वयन समिति, चेन्नै
द्वारा आयोजित अंताक्षरी
प्रतियोगिता में इस
कार्यालय को तृतीय
पुरस्कार प्राप्त हुआ ।





हिंदी दिवस 2024



